Total No. of Questions - 6] [Total Pages : 4

(2062)

9824

M.A. Examination

SANSKRIT

(वेद)

Paper–V

(Semester-II)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80, Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर एक ही स्थान पर दें। प्राइवेट विद्यार्थियों के अङ्क कोष्ठक के अन्दर दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** मन्त्रों की ऋषि, छन्द तथा देवता का निर्देश करते हुए सप्रसङ्ग व्याख्या करें–

(क) सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येोति पश्चति।

यत्रा नरौ देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रतिं भद्राय भद्रम्।।

(ख) यः पृथिवीं व्यथमानामदृह्द् यः पर्वतान् प्रकृपिताँ अरम्णात्।

यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तम्नात् स जनास इन्द्रः।।

(ग) उपः प्रतीची भुवनानिविश्वोधूर्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः।

समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्सवः।।

(घ) यस्य ब्रते पृथिवी नंनमीति यस्य ब्रते शाफवर्ज्जभुरीति।

यस्य ब्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्यमहि शर्मयच्छ।।

(ङ) यमाय सोमं सुनुत यमायजुहुता हविः।

यमं हि यज्ञो गच्छ त्याग्निदूतो अरं कृतः।।

(च) यं क्रन्दसी अवसा तस्तमाने अभ्यैक्षेतां मनसारेजमाने।

यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

10×3=30

(12×3=36)

2. अधोलिखित में से किन्हीं **चार** शब्दों की व्याकरण-प्रक्रिया स्पष्ट करें–

विममे, ववृत्सवः, उच्यते, क्रन्दसी, सृजामि, कृष्ट्यः, भेजिरे, द्रविणस्य।

4×2½=10

(4×3=12)

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित I/19 सूक्त के आधार पर अग्नि देवता की विशेषताओं का वर्णन करें।

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित I/25 सूक्त के अनुसार वाक् देवता का वैशिष्ट्य बताएँ। 10(11)

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** मन्त्र का पद पाठ लिखें :

(क) अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सोम्यं मधु।
मरुद्भिरग्न आ गेहि।।

(ख) ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहु राजन्यः कृतः।
ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।। 10(11)

5. अधोलिखित में किन्हीं **दो** मन्त्रों की सुस्पष्ट व्याख्या करें–

(क) यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभुवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजदसा ना भूमिर्गोऽएवप्यन्ने दधातु।।

(ख) यस्ते गन्धः पृथिवि संबभूव यं बिभ्रत्योषधयो यमापः।
यं गन्धर्वा अप्सरसश्च भेजिरे तेन सा सुरभि कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन।।

(ग) जन्म बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्त्रधारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरूपस्फुरति।।

(घ) ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम्।

ये संग्राम्याः समितयस्तेणु चारुवदेम ते। 2×5=10

(2×7½=15)

6. अथर्ववेद के भूमि-सूक्त के आधार पर पृथिवी का वैशिष्ट्य बताएँ।

अथवा

'सा नो भूमिर्व सृजतां माता पुत्राय मे पर्य', इस कथन की व्याख्या करें। 10(15)